अध्याय 27

1	प्रार्थना

समूह का अगुवा: प्रार्थना के साथ आप परमेश्वर के लिए चेले बनाने वाले इस कोर्स व अपने समूह को परमेश्वर के हाथों में सौंप दें।

2	आराधना (20 मिनट) [परमेश्वर की विशेषताएं] परमेश्वर को जाना जा सकता है।

परमेश्वर कारीगरों द्वारा बनायी गयी कोई मूर्ति या किसी दर्शन शास्त्री या नबी द्वारा कल्पना किया गया ईश्वर नहीं है। बाइबल का परमेश्वर प्रकाशन का परमेश्वर है। बाइबल के परमेश्वर को जाना जा सकता है।

(1) प्रकाशन का परमेश्वर :–

यशायाह 46:1–13 पढ़ें। परमेश्वर, पत्थरों व धातु से बने देवी देवताओं व दर्शनशास्त्रियों या नबियों के काल्पनिक देवताओं व उनके अनुयायियों के सामने खुली चुनौति रखता है कि वे इस प्रमाण के साथ उसके सामने आए कि ये देवता जीवित है तथा भूतकाल में कोई भी ऐसी घटना का प्रमाण दें कि उन्होंने कहा हो और वह पूरा हो गया। दूसरे धर्मों के देवताओं व अनुयायियों के पास इस सन्दर्भ में कहने के लिए कुछ नहीं है। उनके पास ऐसा कोई प्रमाण मौजूद नहीं है कि उनके देवताओं ने कोई भविष्यद्वाणी की थी और बाद में वह पूरी हो गयी।

केवल सच्चा व जीवित परमेश्वर ही अपने आप को निम्न स्पष्ट तरीकों से प्रगट करता है कि लोग उसे जान सकें।

केवल बाइबल का परमेश्वर ही बनाया हुआ परमेश्वर नहीं है।

एक सुनार सोने व चाँदी की मूर्तियाँ बनाता है (यशायाह46:6)। लेकिन परमेश्वर ने खुद सुनार को बनाया है। लोग दर्शन व धर्म के आधार पर देवताओं को बना लेते है। लेकिन लोगों को स्वयं परमेश्वर ने बनाया है।

बाइबल का परमेश्वर अतुल्य है।

मूर्ति को नापा व तौला जा सकता है (यशायाह 46:6)। दर्शनशास्त्र तथा आधुनिक धर्म ने ईश्वर को गणित के आकड़ों तक सीमित कर दिया है। लेकिन जिस परमेश्वर ने अपने आपको बाइबल में प्रगट किया है वह अतुल्य है (यशायाह 46:5)।

केवल बाइबल के परमेश्वर ने ही खुद को मानवीय इतिहास में प्रगट किया है।

मूर्तियों ने आज तक कुछ प्रगट नहीं किया है, क्योंकि उनका कोई अस्तित्व नहीं और वह मृत हैं। दूसरे धर्मों के देवताओं ने खुद को इस रीति पर प्रगट नहीं किया है जिस प्रकार बाइबल के परमेश्वर ने यीशु मसीह में होकर अपने आप को प्रगट किया था। इस कारण अन्य धर्मों के अनुयायियों को परमेश्वर से सम्पर्क बनाने के लिए उनके देवताओं से ऊपर उठना होगा। वे बौद्ध धर्म के आठ सिद्धान्तों वाले मार्ग पर चलकर, ज्ञान के लिए योग करके, साधना करके, धार्मिक काम या हिन्दुओं के रीति रिवाजों को पूरा करके, यहूदी धर्म की व्यवस्था या धार्मिक कामों को पूरा करने के द्वारा अपने देवताओं से ऊपर उठने का प्रयास करते हैं। लेकिन बाइबल के परमेश्वर ने मानवीय इतिहास के प्रारम्भ से अपने आपको प्रगट किया है, क्योंकि वह विद्यमान व जीवित परमेश्वर है (यशायाह 46:9)। बाइबल का परमेश्वर ने स्वयं यीशु मसीह के रूप में इस धरती व मानवीय इतिहास में प्रवेश कर लिया, वह मनुष्यों के बीच में रहने तथा हमें उद्धार देने के लिए आया (यशायाह 9:6–7; यूहन्ना 1:1,14)।

केवल बाइबल के परमेश्वर ने ही भविष्य का प्रकाशन दिया है।

मूर्तियों ने कभी भविष्य में होने वाली बातों के बारे में नहीं बताया। इसके अलावा अन्य धर्मों या दार्शनिकों या गुरू महात्माओं ने ऐसी कोई भविष्य सूचक बात कही जो आने वाले समय में पूरी हुई हो। लेकिन सृष्टि के प्रारम्भ से ही परमेश्वर ने जगत में होने वाली घटनाओं के बारे पहले से ही भविष्यवाणी कर दी थी (यशायाह 46:10)। यीशु मसीह के इस दुनिया में जन्म लेने से हज़ारों वर्ष पूर्व ही प्रथम मनुष्यों अर्थात आदम और हव्वा को सूचित कर दिया गया था, कि उद्धारकर्ता पैदा होगा और वह शैतान के सारे कामों को नष्ट कर देगा (उत्पत्ति 3:15)। मिस्र में होने वाले गुलामी के लिए

अब्राहम को उसके होने से 200 वर्ष पहले ही बता दिया गया था (उत्पत्ति 15:13–14)। मूसा ने 940 वर्ष पहले ही बेबीलोन में होने वाली गुलामी के बारे में भविष्यवाणी कर दी थी (व्यवस्थाविवरण 28:45–63)। 60 से ज्यादा पुराने नियम की भविष्यवाणियाँ यीशु मसीह के जन्म से 200 से 500 वर्ष पूर्ण की जा चुकी थी और वे बाद में सारी यीशु मसीह में पूरी हो गयी।

बाइबल का परमेश्वर ही केवल अपने लोगों को लेकर चलता है।

मूर्तियाँ तब तक एक जगह से दूसरी जगह तक नहीं जा सकती जब तक उनके अनुयायी उन्हें अपने कन्धे पर उठाकर न ले जाएं (यशायाह 46:7)। लेकिन परमेश्वर अपने बच्चों को जन्म से ही उन्हें उठाकर चलता है (यशायाह 46:3–4b; व्यवस्थाविवरण 1:31)।

बाइबल का परमेश्वर ही केवल प्रार्थनाओं को सुनता है।

मूर्तियाँ कभी अपने भक्तों की पुकार को नहीं सुन सकती (यशायाह 46:7b)। दूसरे धर्मों के देवता इतने ऊँचे पर विराजमान या दूर है कि वे प्रार्थना नहीं सुन सकते। दूसरे धर्मों में भक्त अपने ईश्वर से बात करते है, लेकिन उनका ईश्वर उनसे कभी बात नहीं करता है। इसके विपरीत बाइबल का परमेश्वर अपने लोगों की प्रार्थना को सुनता (यशायाह 65:24) और उनसे बात करता है।

बाइबल का परमेश्वर ही उद्धार करता है।

मूर्तियाँ कभी किसी को बचा नहीं सकती हैं (यशायाह 46:7c)। वे तो अपने आप को भी दानवों/राक्षसों की गुलामी में जाने से नहीं बचा सके (यशायाह 46:1–2)। परन्तु बाइबल का परमेश्वर अपने लोगों को गुलामी से छुड़ाता (यशायाह 46:4c) और उन्हें उनके पापों से बचाता है (यशायाह 43:25)।

सम्पूर्ण इतिहास में लोगों ने सोना, चाँदी और लकड़ियों की मूर्तियां बनायी हैं। कई लोगों ने अपने दिमाग में अपने भगवान की अपनी ही तस्वीर बना रखी है। उन्होंने ईश्वर की कल्पना करके, अर्थात परमेश्वर ऐसा या वैसा होगा सोचकर अपनी समझ के अनुसार अपने ईश्वर की तस्वीर का निर्माण किया है। उदाहरण के तौर पर, यहूदियों का विचार है कि वे संख्याओं के जोड़ के द्वारा अपने परमेश्वर के स्वभाव को प्रगट कर सकते हैं। इन यहूदियों का मानना है कि यदि वे यहूदी नियमों या व्यवस्था का पालन करें तो उनका परमेश्वर उनका उद्धार करता है, जिसमें फरीसियों द्वारा 613 नियमों को और जोड़ दिया हैं, जिसमें 248 आज्ञाएं और 365 निषेधाज्ञाएं हैं। तथा यहूदी लोग अपनी समझ के आधार पर कहते है कि केवल इस्राएल के लोग ही परमेश्वर के निजी लोग हैं। यहूदियों का परमेश्वर एक विशेष जाति, विशेष देश तथा विशेष धर्म का ईश्वर बन गया है।

लेकिन परमेश्वर के बारे में उनका विचार बाइबल में प्राप्त परमेश्वर से मेल नहीं खाता! उनका विचार केवल मनुष्यों द्वारा बनाये विचारों तक ही सीमित हैं। बाइबल का परमेश्वर उनके बारे में कहता है "ये लोग अपने होठों से तो मेरी बढ़ाई करते हैं, परन्तु उनका हृदय मुझसे बहुत दूर है (यशायाह 29:13; मरकुस 7:6–7)। यशायाह इस बात का दावा करता है कि बाइबल का परमेश्वर अतुल्य है (यशायाह 46:5) : "क्योंकि परमेश्वर मैं ही हूँ, दूसरा कोई नहीं है; मैं ही परमेश्वर हूँ और मेरे तुल्य कोई भी नहीं है। मैं तो अन्त के बाद आदि से और प्राचीन काल से उस बात को बताता आया हूँ, जो अब तक नहीं हुई है। मैं कहता हूँ" मेरी युक्ति स्थिर रहेगी और में अपनी इच्छा को पूरी करूँगा। मैं ही ने यह बात कही है और उसे पूरी भी करूँगा, मैं ने यह विचार बाधा है और उसे सफल भी करूँगा (यशायाह 46:9–10, 11b)।

(2) प्रकाशन का मध्यस्थ

मत्ती 11:25–27 पढ़ें। बाइबल के परमेश्वर का सच्चा ज्ञान हमें केवल प्रभु यीशु मसीह के द्वारा प्राप्त होता है। और परमेश्वर का ज्ञान उन लोगों पर प्रगट किया जाता है जिन पर यीशु मसीह स्वयं प्रगट करना चाहें। यीशु मसीह परमेश्वर व लोगों के बीच में एक मध्यस्थ है (1 पतरस 1:10–12)। जो लोग यीशु मसीह को जानते है वे पिता परमेश्वर को जानते है (यूहन्ना 8:19)।

आराधना –

परमेश्वर को जाना जा सकता है इसलिए परमेश्वर की आराधना करें। तीन–तीन का छोटा समूह बनाकर परमेश्वर की अराधना करें।

3	**बाँटें** (20 मिनट)	**[शान्त समय]** **उत्पत्ति–12:1–15:21**

आपने जो कुछ दिये गये बाइबल अनुच्छेद (उत्पत्ति 12:1–15:21) से अपने शान्त समय में सीखा है उसे संक्षेप में **बाँटें या (अपनी कॉपी में से पढ़ें)।**
बताने वाले व्यक्ति की बातों को ध्यान से सुने, उसे गम्भीरता से लें और स्वीकार करें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

4	**शिक्षा** (70 मिनट)	[सुसमाचार] सुसमाचार की उदाहरण –भाग 2

परिचयः लोगों में सुसमाचार प्रचार करते समय, हमें इस्तेमाल किये जाने वाले शब्दों का मतलब समझाना आना चाहिए। लोगों की "पाप","मृत्यु" और "न्याय", जैसे शब्दों को समझने में (मैनुएल। अध्याय 2 देखें), तथा यह समझाने में सहायता करनी चाहिए कि, "पिता के पास पहुँचने के लिए यीशु मसीह ही एक मात्र मार्ग क्यों है" तथा "मसीह में विश्वास होने का" क्या अर्थ है (यह अध्याय)।

यीशु मसीह के सारे संसार का उद्धारकर्ता होने का अभिप्राय

सुसमाचार का संदेश कहता है कि, "किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं, क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिसके द्वारा हम उद्धार पा सके।(प्रेरितों के काम 4:12)

सिखाएं– यीशु मसीह ही सारे जगत के एक मात्र उद्धारकर्ता क्यों है? दूसरे उद्धारकर्ता कहलाये जाने वाले क्यों लोगों का उद्धार नहीं कर सकते? ध्यान दें कि क्यों यीशु मसीह ही एक उद्धारकर्ता होने के योग्य है।

1– यीशु मसीह ने दावा किया :

यूहन्ना 5:16–30 पढ़ें। यीशु मसीह परमेश्वर पिता के समान है (यूहन्ना 5:18)। उसमें परमेश्वर पिता का ईश्वरीय जीवन पाया जाता है (यूहन्ना 5:26)। वह परमेश्वर पिता के समान ही काम करता है (5:19)। वह आत्मिक रूप से मृतक लोगों को अनन्त जीवन प्रदान करता है (यूहन्ना 5:21, 24–25)। वह न्याय के दिन शारीरिक रूप से मृतक लोग को जिवित करेगा और न्याय करेगा (5:21–22, 28–29)।

यूहन्ना 10:36-38 पढ़ें। यीशु मसीह महज कोई इन्सान नहीं थे, जिसने परमेश्वर होने का दावा किया हो (यूहन्ना 10:33), वरन् वह परमेश्वर का पुत्र है; अर्थात परमेश्वर ने मनुष्य का स्वरूप धारण किया और इस संसार व मानवीय इतिहास में प्रवेश किया और मनुष्य को बचा लिया (यूहन्ना 10:36) परमेश्वर पिता ही परमेश्वर पुत्र है और परमेश्वर पुत्र ही परमेश्वर पिता है (यूहन्ना 10:38)। और परमेश्वर पुत्र उन्हीं कामों को करता है, जिन्हें वह परमेश्वर पिता को करते हुए देखता है (10:37)।

यूहन्ना 14:6-10 पढ़ें। परमेश्वर पुत्र ही परमश्वेर पिता तक पहुँचने का एक मात्र मार्ग है (14:6)। परमेश्वर पुत्र ने ही परमेश्वर पिता को प्रगट किया है (14:7,9)। जब यीशु ने कहा "मैं पिता में हूँ और पिता मुझ में है" (यूहन्ना 14:10), उस समय पर वह आत्मिक एकता की चर्चा नहीं कर रहा था, बल्कि वह सत्तामूलक एक की बात कर रहा था - अर्थात परमेश्वर पिता व परमेश्वर पुत्र का ईश्वरीय स्वभाव समान है। इसीलिए यीशु मसीह कहते है कि जब आप यीशु को देखते है तो परमेश्वर पिता को देखते है और जब आप यीशु को जानते है तो परमेश्वर पिता को जान जाते है।

मत्ती 10:40 व लूका 10:16 को पढ़ें। यीशु मसीह कहते है कि जो यीशु को स्वीकार करता है वह पिता को स्वीकार करते है और जो उसे ग्रहण नहीं करता वह पिता को ग्रहण नहीं करता।

ये सारे दावे सत्य हैं क्योंकि ये भविष्यवाणियाँ पूरी हो चुकी है।

यशायाह 7:14; 53:5; पढ़ें। यीशु मसीह इस दुनिया में आने से करीब 700 वर्ष पहले परमेश्वर ने भविष्यवाणी कर दी थी कि उस उद्धारकर्ता का नाम "परमेश्वर हमारे साथ है होगा तथा वह" हमें बच्चाने के लिए हमारे अपराधों के कारण घायल होगा। पुराने नियम में की गयी आने वाले मसीहा अर्थात उद्धारकर्ता से जुड़ी करीब 60 भविष्यवाणियाँ तो उसके जीवन के एक ही दिन में पूरी हो गयी थी। यह कोई सयोग नहीं था। बल्कि परमेश्वर ने उद्धारकर्ता के जन्म के बारे में पहले से बता रखा

था। यीशु मसीह ने उन सभी भविष्यद्वाणियों को पूरा किया। इसी कारण उसके दावें सत्य है (देखे मैनुएल 3, परिशिष्ट 4: यीशु मसीह से जुड़ी भविष्यद्वाणियाँ)।

2-प्रेरितों ने यीशु के सन्दर्भ में अनोखे दावे किये।

पढ़ें प्रेरितों 4:12:- प्रेरित ने दावा किया कि परमेश्वर ने धरती के लोगों के उद्धार के लिए केवल एक ही नाम दिया है। और वह नाम यीशु है। यीशु कोई भविष्यद्वक्ता नहीं है जो हमें उद्धार का मार्ग दिखाता है, लेकिन वह स्वर्ग उद्धार का एक मात्र मार्ग है।

3- यीशु और प्रेरितों के दावे पूरी तरह से मान्य क्यों हैं:

ये दावे इसलिए मान्य है क्योंकि मनुष्यों और परमेश्वर के बीच में यीशु ही एकमात्र मध्यस्थ है।

यूहन्ना 1:1-4; 11-12; 1 तीमुथियुस 2:5 पढ़ें। जगत की उत्पत्ति से पूर्व ही परमेश्वर ने निर्धारित कर रखा था कि वह स्वयं अपने नियत समय पर यीशु मसीह के रूप में मानव रूप धारण करेंगे (1 पतरस 1:20)। और संसार की सृष्टि से पहले ही परमेश्वर ने हमें यीश् मसीह में होकर अपनी पवित्र और निष्कलंक प्रजा होने के लिए चुन लिया है (इफिसियों 1:4)। परमेश्वर ने लोगों को उनके पापों से मुक्ति प्रदान करने के लिए मानव इतिहास में जन्म लिया तथा काफी समय उनके साथ बिताया। इसलिए यीशु ने कहा "पिता मुझ में होकर, अपने काम करता है (यूहन्ना 4:10)।"

परमेश्वर और मनुष्यों के बीच में केवल एक ही मध्यस्थ का अर्थ है वह व्यक्ति जो परमेश्वर व मनुष्य के बीच में खड़ा होता है; अर्थात वह जन जिसमें अप्रत्यक्ष परमेश्वर प्रत्यक्ष रूप से काम करता है (यूहन्ना 1:3)। वह परमेश्वर के प्रकाशन का मध्यस्थ है, क्योंकि परमेश्वर हर चीज़ को यीशु मसीह के द्वारा ही बनाया है (यूहन्ना 1:4)। वह उद्धार के निमित्त भी मध्यस्थ है, क्योंकि परमेश्वर यीशु मसीह में होकर ही आत्मिक बच्चों को स्वीकार करते हैं (यूहन्ना 1:12)। एक मध्यस्थ होने के नाते, यीशु मसीह मनुष्यों में परमेश्वर के पतिनिधी हैं (मत्ती 1:23; कुलुस्सियों 1:15) और परमेश्वर के सामने मनुष्यों का प्रतिनिधित्व करते है।

यह दावे मान्य हैं क्योंकि केवल यीशु मसीह में ही जगत का उद्धारकर्ता होने की योग्यताएं हैं।

यीशु मसीह ही मनुष्यों व परमेश्वर के बीच में एकमात्र मध्यस्थ तथा जगत के उद्धारकर्ता हैं, क्योंकि उन्हें तीन प्रमुख क्षेत्रों में महारथ हासिल है।

(1) केवल यीशु मसीह ही परमेश्वर को प्रकट करते हैं।
वह मनुष्यों के लिए परमेश्वर का सिद्ध प्रकाशन है।

पढ़ें इब्रानियों 1:3 (यूहन्ना 1:1, 14, 18; फिलिप्पियों 2:6-8; कुलुस्सियों 1:15; 2:9) किसी अन्य व्यक्ति या धार्मिक अगुवे ने इस प्रकार का दावा नहीं किया था कि व अप्रत्यक्ष परमेश्वर का प्रत्यक्ष मानवीय रूप है। इतिहास में अन्य कोई ऐसा व्यक्ति नहीं था जिसने मनुष्य के रूप में परमेश्वर को धारण कर रखा हो, अर्थात ऐसा परमेश्वर ने मनुष्य के स्वभाव को धारण किया और मनुष्यों के बीच में डेरा किया। यीशु मसीह परमेश्वर की महिमा की चमक है; अर्थात परमेश्वर की विशेषताओं का प्रगट रूप जैसे परमेश्वर की पवित्रता व प्रेम यीशु मसीह वह परमेश्वर को अर्थात वह हू-ब-हू परमेश्वर की सच्चाई व उसके मूल स्वभाव को प्रगट करता है। यीशु मसीह अप्रत्यक्ष परमेश्वर का प्रत्यक्ष रूप है।

(2) केवल यीशु मसीह ही सदा काल के लिए पापरहित व सिद्ध हैं।
वह मनुष्य के पापों के लिए सिद्ध बलिदान है।

पढ़ें - इब्रानियों 4:15; 7:26-28 मनुष्यों के पापों का प्रायश्चित करने हेतू योग्य बलिदान बनने के लिए उस व्यक्ति में चार क्षेत्रों में विशेष गुण होने चाहिए:

- उसे मनुष्य होना ज़रूरी है। (यूहन्ना 1:1,14)! जानवर के बलिदान से प्रायश्चित नहीं हो सकता (इब्रानियों 9:13-14; 10:1:4)।
- उसका पापरहित मनुष्य होना ज़रूरी है (इब्रानियों 4:15; 7:26-28) एक पापी कभी इस योग्य नहीं हो सकता।

- वह स्ववेछा से बलिदान चढ़ाने वाला होना चाहिए। इच्छा के विरूद्ध बलिदान मान्य नहीं होता।
- वह परमेश्वर का चुना हुआ होाना चाहिए (1 पतरस 1:19-20)। खुद नबि या उद्धारकर्ता बने लोग योग्य नहीं हो सकतें।

जगत के इतिहास में किसी भी मनुष्य या धार्मिक गुरू ने यह नहीं कहा कि वह निष्कंलक मरने को तैयार और परमेश्वर द्वारा चुना गया है। इस कारण कोई और पापियों के बदले मरने या बलिदान बनने के योग्य नहीं है। क्या बाकि सारे लोग पापी, मरने स बचने वाले तथा परमेश्वर के द्वारा बुलाये नहीं है। केवल यीशु ही निष्कंलक, प्राणों को देने के लिए इच्छुक व परमेश्वर द्वारा चुना हुआ था। अत: यीशु मसीह ही हमारे पापों का दाम चुकाने के लिए गुणसम्पन्न बलिदान हैं।

(3) केवल यीशु मसीह मृतको में से जी उठे व सदाकाल के लिए जीवित हैं।

वह एक सिद्ध महायाजक है; जो विश्वासियों के लिए प्रार्थना करता तथा उनकी देखभाल करता है।

पढ़ें - इब्रानियों 7:23-25

जगत के किसी व्यक्ति या धार्मिक गुरू ने कभी ऐसा दावा नहीं किया कि वह मृतकों में से जी उठा है। वे नबी व धार्मिक गुरू आज भी अपनी अपनी कब्रो में पाये जाते हैं। वे सब मृतक है, वे न तो किसी का उद्धार कर सकते है और न ही किसी की देखभाल कर सकते हैं।

लेकिन परमेश्वर ने यीशु मसीह को मृतको में से जिन्दा कर के प्रगट किया कि वह ही संसार का उद्धारकर्ता है। उसके मृत्युजंय होने के पश्चात् सैकड़ों लोगों ने उसको चालीस दिनों तक देखा और उन दिनों में वह अपने चुने हुए प्रेरितों को सिखाता था। वह आसमान पर उठा लिया गया और परमेश्वर पिता के दाहिने हाथ पर विराजमान हो गया जहाँ से वह अनुग्रह के सुसमाचार द्वारा लाखों, करोड़ों लोगों के हृदय व जीवन में परमेश्वर का राज्य स्थापित कर रहा है।

लेकिन बचने या मुक्ति पाने का अनुग्रह उसके वापस आने तक ही उपलब्ध है (नीतिवचन 27:1; 2कुरिन्थियों 6:2)। यीशु मसीह के दूसरे आगमन पर, वह धरती पर न्याय करने के लिए आएगा, न कि उसे पापों से बचाने के लिए। उसके पश्चात् पश्चाताप करने या विश्वास करने का कोई अवसर नहीं होगा। इसलिए जब आप सुसमाचार सुने, उसी वक्त, पश्चाताप और विश्वास करें!

ख - बाइबल में विश्वास का अर्थ

सुसमाचार का संदेश कहता हैं "क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करें वह नाश न हो परन्तु अनन्त जीवन पाए (यूहन्ना 3:16)।"

(1) विश्वास क्या है?

मसीही सत्य कुछ तत्यों पर आधारित है!

मसीही विश्वास अंधरे में छलांग लगाना नहीं है। विश्वास तर्को की समाप्त होने पर शुरू नहीं होता। विश्वास इतिहास के किसी एक काल में भविष्यवक्ता द्वारा कहे गयें वचनों के आधार पर आधारित नहीं है; बल्कि यह उस सत्य प्रकाशन पर आधारित है जो 40 से भी ज्यादा भविष्यद्वक्ताओं द्वारा 2000 वर्ष के अन्तराल में जगत के तीनों कालों के लिए दिया गया है। बाइबल में पाया जाने वाला विश्वास तथ्यो पर आधाारित है। विश्वास इस बात का प्रमाण या निश्चय है कि कहें गये तत्य सत्य हैं। विश्वास का अर्थ इन सच्चाईयों के प्रति व्यक्तिगत तौर पर सुनिश्चित व स्पष्ट होना तथा इन सच्चाईयों को प्रगट करने वाले परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत सम्बन्ध होना हैं।

इतिहास में किसी भी धर्म या ऐतिहासिक घटना से ज्यादा मसीही विश्वास के साक्षी हैं।

बाइबल, मानव इतिहास में परमेश्वर द्वारा बोले गये तथ्यों व किये गये कार्यों से भरपूर है। इतिहास में किसी भी मान्य घटना से कही ज्यादा चश्मदीद गवाह, कानों से सुनने वाले गवाह, बाइबल में पाये जाने वाले लेख, अनेको भाषाओं में बाइबल के अनुवाद और पुरातत्वीय प्रमाण उपलब्द है, जिन्हें आज बिना किसी सन्देह के इतिहास के तौर पर स्वीकार किया जाता है। उदाहरण के लिए:

- यशायाह की इब्रानी भाषा में लिखी पूरी पुस्तक; कुमरान में मृतक सागर में दिनाँक 125 ई०पू० मिली थी। (लिखे जाने के 560 वर्षो के बाद)।

- मरकुस का यूनानी भाषा में लिखा अंश अर्थात मरकुस 6:52-53 दिनाँक 50 ई०प० मिला था (लिखे जाने के 4 वर्षो के बाद)।
- यूहन्ना रचित सुसमाचार का इब्रानी भाषा में लिखा अंश अर्थात यूहन्ना 18:31-34, 37-38, दिनाँक 130 ई०प० लिखा गया (लिखे जाने के 33 वर्षो पश्चात्)।
- चेस्टर बैटी पापेरी, जिसमें ज्यादातर ग्रीक नया नियम शामिल था जिसकी दिनाँक 200-250 ई०प० दी गई है (नये नियम पूरा होने के 250 वर्ष बाद)।
- The codex vaticanus, जिसमें पूरा नया नियम ग्रीक भाषा में है, पर 325-350 ई०पू० की तिथी अंकित है। (नये नियम के पूरा होने के 250 वर्ष बाद)
- The codex sinaiticns, जिसमें पूरा ग्रीक भाषा में नया नियम तथा लगभग आधा पुराना नियम शामिल था जिसकी 350 ई०प० दी गयी है (नये नियम के समाप्त होने के 250 वर्षो के बाद)।
- The codex Alexand ninus, जिसमें लगभग पूरी ग्रीक बाइबल है, पर 400 ई०प० अंकित है। (नये नियम पूरा होने के 300 वर्ष पश्चात्)
- 10वी शताब्दी से 18वी शताब्दी ई०प० के बीच में ग्रीक भाषा में लिखी पाँच हजार से अधिक सुसमाचार की प्रतिया पायी गयी है।
- हजारों की संख्या में लैटिन, सीरियन, मिस्री, गौथिक, अरमेनियरि, कूशी, जोर्जियन तथा उपरबी भाषा में अनुवाद की गयी सुसमाचार की प्रतियां 2 से 4 शताब्दी ई०प० में लिखित पायी गयी है। (नये नियम के पूरे हो जाने के 300 वर्षो के बीच के उदाहरण)

यह ऐतिहासिक तौर पर प्रमाणित है कि बाइबल के किसी भी अंश को कभी भी बदला नहीं गया है। किसी भी धर्म द्वारा लगाया जाने वाला यह आरोप कि बाइबल झूठी या मनगड़न्त कहानी है तो यह झूठ है। जो कोई जन इन प्रमाणो का अध्ययन करने से परहेज करता है वह बुद्धिमान नहीं है। मसीही संदेश सम्पूर्ण मानवजाति के इतिहास का सबसे महत्वपूर्ण संदेश है। इसी कारण लोगों को मसीही संदेश पर ध्यान देना चाहिए।

(2) किस तरह यीशु पर विश्वास करना सम्भव होता है?

मनुष्य के विश्वास के सन्दर्भ में परमेश्वर का क्या काम है? बाइबल में विश्वास के साथ परमेश्वर द्वारा मनुष्य के लिए प्रकाशन व उसका अनुग्रह तथा मनुष्य का भरोसा व उसकी आज्ञाकारिता जुड़ी हुई है। बिना परमेश्वर के प्रकाशन व अनुग्रह के विश्वास अनहोना है। वेसे ही बिना मनुष्य, की आज्ञाकारिता के विश्वास अधूरा है। परमेश्वर अपने प्रकाशन व अनुग्रह के द्वारा हमेशा पहल करते हैं। मनुष्य बाद में ही अपने नियमित विश्वास (भरे) तथा आज्ञाकारिता के द्वारा (भले कामों) प्रतिउत्तर देता है।

परमेश्वर का प्रकाशन - ताकि आपको विश्वास करने वाली बातों का पता चल सके।

पढ़ें रोमियों 10:14-17; इब्रानियों 11:6-8। परमेश्वर किसी को सुसमाचार सुनाने के लिए आपके पास भेजकर पहल करता है (रोमियों 10:14-17)। परमेश्वर ने अब्राहम व नूह द्वारा प्रतिउत्तर में विश्वास व काम करने से पहले खुद को व अपनी इच्छा को उन पर व्यक्त किया था। (इब्रानियों 11:6-8)।

परमेश्वर का अनुग्रह - ताकि आप विश्वास करने के योग्य बने।

पढ़ें यूहन्ना 6:44,47; फिलिप्पियों 1:29 (यूहन्ना 16:8; प्रेरितों 13:48) परमेश्वर लोगों को मसीह के नजदीक लाने के द्वारा (यूहन्ना 6:44) और पवित्र आत्मा द्वारा लोगों के मनो व हृदय में काम करने के द्वारा हमेशा पहल करता है: अर्थात उन्हें पाप उद्धार व धार्मिकता के प्रति निरूत्तर करके (यूहन्ना 16:8-10)। इसी कारण जितने लोग विश्वास करते हैं वे मानते व जानते हैं कि उनका विश्वास का अभ्यास परमेश्वर की ओर अनुग्रहकारी वरदान है (इफिसियों 2:8-9; फिलिप्पियों 1:29; प्रेरितों 13:48; 16:14; 18:27)

विश्वास द्वारा प्रतिउत्तर- मानवीय पहल नहीं होती।

पढ़ें इफिसियों 2:8-10; याकूब 2:22। मनुष्य परमेश्वर का पहल का प्रतिउत्तर, परमेश्वर के प्रकाशन पर भरोसा करके तथा परमेश्वर के अनुग्रहकारी वरदानों को स्वीकार करके करता है। विश्वास का अर्थ मनुष्य का खाली हाथ है जिसे परमेश्वर उद्धार

के वरदान से भर देते है। विश्वास को एक पेड़ के तने से दर्शाया जा सकता है, जिसकी जड़े परमेश्वर का अनुग्रह है और जिसके फल मनुष्य के भले काम हैं (इफिसियों 2:8-10)।

मनुष्य के प्रतिउत्तर के सन्दर्भ में यीशु ने कहा "सकेत द्वार में प्रवेश करने का यत्न करो, क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ कि बहुत से प्रवेश करना चाहेंगे और न कर सकेंगे (लूका 13:24; मत्ती 7:13-14)। यीशु ने यह भी कहा" यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के दिनों से अब तक स्वर्ग के राज्य में बलपूर्वक प्रवेश होता रहा है और बलवान उसे छीन लेते हैं (मत्ती1:12)। मनुष्य द्वारा विश्वास के साथ प्रतिउत्तर देने में, साहस, प्रयास, यीशु द्वारा प्रदान की गयी बातों को मजबूती से पकड़े रहने की ज़रूरत होती है।

3. आप व्यवहारिक तौर पर यीशु मसीह में किस प्रकार विश्वास करते हैं?

पढ़ें यूहन्ना 1:12; प्रकाशितवाक्य 3:20 (रोमियों 10:9-10, 13,17)।
परमेश्वर की पहल का प्रतिउत्तर देने के तहत विश्वास के तीन तत्व होते हैं:

ज्ञान :

व्यक्ति को अपने कानो से यीशु मसीह का सुसमाचार सुनना बहुत ज़रूरी है। सुसमाचार में शामिल सच्चाई को सुने बिना विश्वास करना असम्भव है। अन्यथा उसे पता ही नहीं चलेगा कि किस बात पर विश्वास करना है।

भरोसा (विश्वास):

मनुष्य को अपने हृदय से यह विश्वास करना चाहिए कि यह सन्देश न सिर्फ दूसरों के लिए वरन खुद उसके लिए भी सत्य है। जब तक वह स्वयं यह नहीं मान लेता है कि यह सारी बाते स्वयं उसके लिए सत्य है, तब तक सुसमाचार उसके लिए सिर्फ ज्ञान है, जिससे उसे कोई फर्क नहीं पड़ता और न उसमें कोई बदलाव आता है।

स्वीकार करना:

मनुष्य को अपने मुह से प्रार्थना करके यीशु को उसका उद्धार करने के लिए बुलाना चाहिए। उसे अपनी प्रार्थना में अंगीकार करना चाहिए कि यीशु मसीह "परमेश्वर" है और केवल उसका परमेश्वर नहीं वरन सारे जगत का परमेश्वर है। उसे अपने हृदय और मन में बिना उद्धार का वरदान प्राप्त किये, उस व्यक्ति का छुटकारा नहीं हो सकता (रोमियों 5:17)।

(4) यदि आपको यीशु मसीह में विश्वास करना मुश्किल जान पड़ता है तो आपको क्या करना चाहिए?

यदि आपको उस पर विश्वास करना मुश्किल लगे तो पहले आप उसका अनुसरण करें?

पढ़ें यूहन्ना 1:37-39, 43-50; मत्ती 9:9

आज्ञाकारिता से विश्वास उत्पन्न होता है।

जब यीशु ने लोगों को चेला बनने के लिए बुलाया, तो उनसे कहा, "आओ और देखो"! तथा "मेरे पीछे हो लो"। यूहन्ना व अन्द्रियास ने यीशु की बुलाहट को माना और वह यीशु के साथ चला गया और पूरा दिन उसके साथ बिताया। उसके बाद उन्होंने उसका अनुसरण करना न छोड़ा। फिलिप्पुस ने यीशु की बुलाहट को माना, और तीनों लोगों के छोटे समूह (यूहन्ना, पतरस और अन्द्रियास) का सहभागी बन गया। उसकी बारी आने पर फिलिप्पी ने नथानिएल को "आकर देखने के लिए कहा"। नथानिएल ने उस बुलाहट (नियन्त्रण) का जवाब दिया और यीशु के पास आया। उसने विश्वास करते हुए कहा "हे गुरू तू परमेश्वर का पुत्र है; तू इस्राएल का राजा है।" इसके अलावा मत्ती ने भी यीशु की बुलाहट का प्रतिउत्तर दिया और अपना व्यवसाय छोड़कर यीशु के पीछे हो लिया।

कम से कम नथानिएल के बारे में, शिष्यता की बुलाहट (यीशु का अनुसरण करने की बुलाहट) का परिणाम तुरन्त विश्वास नहीं था, जैसा कि हम दूसरों से उम्मीद करते है। जबकि वह पहले सुनते, विश्वास करते तथा आज्ञापालन करते है; नथानिएल ने सुना आज्ञामानी और विश्वास किया। सुनने के बाद पहले उसने आज्ञामानी फिर विश्वास किया। यीशु की बुलाहट के प्रतिउत्तर देने से विश्वास जागा तथा शिष्यता का निर्माण हुआ। नथानिएल एक आलोचनात्मक प्रवृति का व्यक्ति था जो सुनकर आसानी से विश्वास नहीं करता था। इसी कारण फिलिप्पुस ने उसे सुसमाचार के तथ्यों या तार्कों द्वारा कायल करन का प्रयास नहीं किया वरन उसने उससे "आकर देखने" के लिए कहा केवल आकर देखने के निमन्त्रण को स्वीकार करने पर ही,

नथानिएल ने यीशु पर विश्वास किया और यीशु का शिष्य बन गया यीशु की बुलाहट को स्वीकार करने के बाद ही नथानिएल, ऐसी स्थिति में आया जहाँ विश्वास करना सम्भव न सच्चा था। अंजीर के पेड़ के नीचे से उठने तथा यीशु से मिलने के लिए जाने पर ही, वह ऐसी स्थिति में आया जहाँ यीशु मसीह पर विश्वास करना सम्भव हुआ और जहाँ यीशु पर विश्वास करना एक वास्तविकता बन गया। विश्वास व शिष्यता के लिए एक मात्र रास्ता यीशु मसीह की बुलाहट को स्वीकार करना है जो कहती है "आओ और देखो" या "मेरे पीछे हो लो"।

आज्ञाकारिता अनिवार्य है।

यीशु मसीह का शिष्य बनने की बुलाहट को जरूर मानना चाहिए। अन्यथा, यह बिना शिष्यता के मसीहीयत बन जाती है। और बिना शिष्यता मसीहियत का अर्थ बिना मसीह के मसीहियत है। इस प्रकार की मसीहियत में, लोग परमेश्वर पर विश्वास तो करते हैं, परन्तु यीशु के साथ समय नहीं बिताते। इस प्रकार का विश्वास बिल्कुल अलग विचार बन जाता है, अर्थात ऐसी गलत धारण बन जाती है, जिसमें परमेश्वर पिता के लिए तो स्थान होता है। लेकिन वे यीशु मसीह को परमेश्वर का पुत्र मानने से इनकार कर देते है। एक ही ईश्वर है, केवल इन ही विश्वास करना काफी नहीं है। क्योंकि दुष्टात्माएँ भी विश्वास करती है कि एक ईश्वर है और काँपतो हैं (याकूब 2:19)। यीशु मसीह के साथ संगति किये बिना ही परमेश्वर पर विश्वास करना मृतक विश्वास है (याकूब 2:17)। लोग यीशु मसीह के साथ केवल एक ही प्रकार के रिश्ते को बना सकते हैं अर्थात उसके चेले बनने की बुलाहट को स्वीकार करना और उसका अनुसरण करना। अब्राहम का विश्वास भी उसके कामों के द्वारा पूरा हुआ(याकूब 2:22)।

अत: जब किसी व्यक्ति को सुसमाचार की सच्चाई पर विश्वास करने में कठिनाई महसूस हो तो वह यीशु मसीह की बुलाहट का पालन करे, अर्थात "आकर देखो!" या "मेरे पीछे हो लो!" जब इस प्रकार का व्यक्ति उठकर यीशु मसीह का अनुसरण करने लगता है, तो वह व्यक्ति ऐसा स्थान में पहुच जाता है जहां सच्चा विश्वास करना सम्भव हो जाता है।

5. शिष्यता के प्रति यीशु की बुलाहट महत्वपूर्ण क्यों है?

(1) यीशु मसीह की शिष्यता के प्रति बुलाहट बहुत जरूरी है।

पढ़ें। लूका 9:57-58 । शिष्यता के प्रति यीशु की बुलाहट अति आवश्यक है, क्योंकि कोई भी शिष्यता की सही कीमत का अन्दाजा नहीं लगा सकता। सर्वप्रथम महत्वाकाक्षीं शिष्य ने शिष्यता की बुलाहट मिलने का इन्तज़ार नहीं किया; यीशु जहाँ कहीं गया वह उसके साथ जाने लगा । यीशु ने उससे कहा कि उसे चेले बनकर बहुत सी बार सोने के लिए सिर रखने की जगह भी नसीब नहीं होगी। शिष्यता का अर्थ क्रूस उठाना है, क्योंकि यीशु स्वयं उस क्रूस को उठाने के मार्ग पर थे। कोई भी अपने आप को इस प्रकार की योजना के लिए अर्पित नहीं कर सकता। महत्वाकांक्षी शिष्य ने यीशु को कोई जबाव नहीं दिया असल में वह कोई जवाब दे नहीं पाया, क्योंकि यीशु का अनुसरण करने की उसकी इच्छा और यीशु के पीछे हो लेने की बुलाहट के बीच में काफी बढ़ा फरक था।

(2) शिष्यता के प्रति यीशु मसीह की बुलाहट पूरी तरह से सिद्ध है।

लूका 9:59-60 **पढ़ें।** शिष्यता के प्रति यीशु मसीह की बुलाहट पूरी तरह सिद्ध है, क्योंकि यीशु और शिष्यता के बीच में किसी अन्य चीज़ के खड़े होने की जरूरत नहीं है। यीशु मसीह और बुलाये गये व्यक्ति के बीच में कोई भी धार्मिक व्यवस्था और कोई सामाजिक रीति खड़ी नहीं होनी चाहिए। दूसरा, महत्वाकांक्षी शिष्य यीशु की शिष्यता की बुलाहट को तो पाता है, परन्तु वह यहूदी धार्मिक अगुवों के द्वारा बतायी गयी व्यवस्थाओं से बंधा हुआ होता है: अर्थात "पहले जाकर मैं अपने पिता को दफना आऊँ।" वह बहुत अच्छी तरह से जानता था कि यीशु उससे क्या करवाना चाहते हैं, लेकिन फिर भी वह पहले व्यवस्था की माँग को पूरा करना चाहता है। धार्मिक नियमों ने यीशु मसीही की बुलाहट को मानने तथा महत्वाकांक्षी चेले के बीच में बाधा का काम किया। यीशु मसीह की शिष्यता के प्रति बुलाहट हमारे जीवन के सबसे बलवन्त बुलाहट होनी चाहिए, किसी भी बाधा से बलवन्त। यीशु मसीह व बुलाये गये मनुष्य के बीच में कोई दूसरी वस्तु नहीं आनी चाहिए। यीशु मसीह व बुलाये गये व्यक्ति के बीच में आने वाली हर बाधा को यीशु मसीह की खातिर तोड़ दिया जाना, या दूर किया जाना ज़रूरी है। पुराने धार्मिक नियम व सामाजिक रीतियाँ, यीशु मसीह व शिष्यों के बीच में बाधा इसलिए उत्पन्न करते हैं क्योंकि उन्हें अपनी प्रभुता खोने का डर रहता है। यीशु मसीह का अनुसरण करने के लिए इन पूर्व धार्मिक नियमों व सामाजिक रीतियों का टूटना बहुत ज़रूरी है। परमेश्वर यीशु मसीह में व उसके द्वारा हमसे बातें करता है (इब्रानियों 1:1-2)। शिष्यता के प्रति यीशु मसीह की

बुलाहट का अनुपालन किया जाना चाहिए। उसके होने वाले अनुयायी या शिष्य यीशु की श्रेष्ठ बुलाहट को नज़रअन्दाज़ नहीं कर सकते('किक अगेन्स्ट द प्रिक' व प्रेरितों 26:14-18)। यीशु मसीह की बुलाहट अनग्रह है और अनुग्रह अप्रतिरोध्य होता है। उसके अनुग्रह ने यूहन्ना, इन्द्रियास,पतरस,फिलिप्पि व नथानियेल के जीवन में विजय प्राप्त की। उसके पश्चात इसी अनुग्रह ने पौलुस के व संसार में करोड़ों अन्य लोगों के जीवनों को जीत लिया।

(3) यीशु मसीह की शिष्यता के पति बुलाहट की कोई शर्त नहीं होती।

लूका 9:61-62 **पढ़ें।** यीशु मसीह की शिष्यता की बुलाहट में कोई शर्त शामिल नहीं होती, क्योंकि शिष्यता करने के लिए किसी को भी अपनी मनमानी करने को आज्ञा नहीं है। तीसरे महत्वाकाक्षीं शिष्य ने यीशु की शिष्यता की बुलाहट का इन्तज़ार नहीं किया, बल्कि उन्होने यह सोचकर यीशु के पीछे चलना शुरू कर दिया कि शिष्यता नहीं उन्हें कोई नौकरी मिल गयी हो। हालांकि, पहली बार में बुलाये गये चेलों ने शिष्यता के मूल्य के बारे में कोई विचार नहीं किया, लेकिन तीसरी प्रकार के चेलों ने शिष्यता में शामिल होने से पहले ही अपने मूल्यों,शर्तों व अवधि को सामने रखना शुरू कर दिया। वह पहले अपने घर जाकर अपने परिवार से विदा लेना चाहता था। जबकि दूसरे प्रकार के चेले धार्मिक व सामाजिक बंधनों में फँसे हुए थे, और तीसरे प्रकार के चेलों ने यीशु और अपने बीच में खुद ही बाधा को खड़ा किया था। वह यीशु का अनुसरण तो करना चाहता था लेकिन अपनी शता व सहूलियत के आधार पर । उसके लिए शिष्यता को केवल तभी स्वीकार किया जा सकता था जब उसकी अपनी शर्तें पूरी कर दी जाएं। अत: उसने शिष्यता के स्तर को मानवीय समझ के स्तर तक गिरा दिया: "पहले आप ये करें फिर आपको यह करना होगा''। इस प्रकार की शिष्यता सच्ची शिष्यता नहीं, वरन एक मानवीय धर्म है। सच्ची शिष्यता अपने और परमेश्वर के बीच में किसी प्रकार की शर्त को नहीं आने देती।

इस कारण यदि किसी व्यक्ति को सुसमाचार की सच्चाई पर विश्वास करने में कोई दिक्कत होती हो तो, वह यीशु मसीह की बुलाहट को मान, अर्थात " आओ और देखो" या " मेरे पीछे हो लो।" जब इस प्रकार का व्यक्ति उठकर यीशु मसीह का अनुसरण करने लगता है, तो वह व्यक्ति ऐसे स्थान में पहुंच जाता है जहाँ सच्चा विश्वास करना सम्भव हो जाता है। बुलाया गया व्यक्ति सबसे पहले अपने अविश्वास की स्थिति से बाहर निकलकर यीशु मसीह की ओर पहला कदम उठाए ताकि वह विश्वास कर सकने वाली परिस्थिति में पहुँच सके।

सारांश: यीशु मसीह की बुलाहट को अर्थात "आओ और देखो" या " मेरे पीछे हो लो।" ऐसी परिस्थितियों का निर्माण करती है जहां विश्वास करना आसान हो जाता है। विश्वास करने वाला व्यक्ति ही सच में आज्ञाकारी होता है। आज्ञापालन करने पर विश्वास एक सच्चा विश्वास बन जाता है(याकूब 2:22) और सच्ची आज्ञाकारिता, विश्वास करने में है(यूहन्ना 6:28-29)

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	*[प्रतिक्रियाएं]* **परमेश्वर के वचन के प्रतिउत्तर में प्रार्थना**

आज सीखी गयी शिक्षाओं की प्रतिक्रिया के रूप में अपने समूह में परमेश्वर से ***संक्षिप्त*** प्रार्थना करें।
या समूह को दो दो या तीन तीन में बाँट कर सीखी गयी बातों पर प्रतिक्रिया देते हुए परमेश्वर से प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2मिनट)	*[निर्धारित कार्य]* **अगले अध्याय के लिए**

(समूह के अगुवे. समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें।)

1. समर्पण : चेले बनाने का संकल्प करें। किसी दूसरे व्यक्ति या समूह के साथ "सुसमाचार सारांश-भाग 2 के आधार पर प्रचार करें, सिखाएं या अध्ययन करें।
2. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय: उत्पत्ति 16:1-19:29 के बीच में से प्रतिदिन आधा अध्याय पढ़कर परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय व्यतीत करें। पसन्दीदा सच्चाई के तरीकों का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।

3. बाइबल अध्ययन । घर पर ही अगल बाइबल अध्ययन की तैयारी करें। प्रेरितों के काम 5:12-42। विषय: कलीसिया का प्रचारकीय उददेश्य। बाइबल अध्ययन के पाँच कदमों वाले तरीके का इस्तेमाल करें। लेखा रखें ।
4. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।
5. चेले बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे का अद्यपन करें । जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।